पूर्ण संख्या—७६

जयपुर-दर्शन

मार्च १९४६ | वर्ष ७
फाल्गुन २००२ | संख्या ९

सम्पादक
पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक
'भूगोल'-कार्यालय, इलाहाबाद

वार्षिक मूल्य	४)
विदेश में	६)
इस प्रति का	।=)

भूगोल कार्यालय — प्रयाग

विषय-सूची

स्थिति

स्थिति सीमा, तथा विस्तार

जैपुर राज्य राजपूताना के उत्तरी-पूर्वी और पूर्वी भाग में २५°४१′ और २८°३४′, उत्तरी अक्षांशों और ७४°४१′ और ७५°१२′ पूर्वी देशान्तरों के बीच में स्थित है। जैपुर राज्य का क्षेत्रफल १५,५७६ वर्ग मील है। क्षेत्रफल की दृष्टि से राजपूताना में जैपुर राज्य का चौथा स्थान है। इस राज्य के उत्तर में बीकानेर, लोहारू और पटियाला है। इसका एक अलग पड़ा हुआ कोट कासिम जिला गुरगांव जिले की रिवाड़ी तहसील और नाभा राज्य से मिला हुआ है। इसके पश्चिम में बीकानेर जोधपुर, किशनगढ़ राज्य और अजमेर का ज़िला है। इसके दक्षिण में उदयपुर बूंदी, टोंक, कोटा और ग्वालियर राज्य हैं। पूर्व की ओर करौली, भरतपुर और अलवर राज्य हैं।

भूरचना

अधिकांश जैपुर राज्य समतल और खुला हुआ है। बीच बीच में पहाड़ियों की श्रेणियां हैं। कहीं कहीं एकाकी पहाड़ियां मैदान के ऊपर उठी हुई हैं। राज्य के मध्य में प्रायः डेढ़ हज़ार फुट ऊंचा त्रिभुजाकार पठार है। इस त्रिभुज की आधार रेखा जैपुर शहर से पश्चिम की ओर चली गई है। पूर्व की ओर अलवर राज्य की सीमा के पास पहाड़ियां उत्तर से दक्षिण की ओर चली गई हैं। अर्वली पर्वत की टूटी फूटी पहाड़ियां सांभर झील से आरम्भ होकर उत्तरी-पूर्वी दिशा में खेतड़ी के पास तक चली गई हैं। यह पहाड़ियां अधिक ऊंची हैं। रघुनाथगढ़ चोटी समुद्र-तल से ५४५० फुट ऊंची है। अर्वली पर्वत उत्तर की ओर शेखावटी के मरुस्थल को जैपुर के उपजाऊ मैदान से प्रथक करता है। इसी ओर राज्य का खुला हुआ भाग है। जैपुर शहर से पश्चिम की ओर किशनगढ़ की ओर बढ़ने पर राज्य की भूमि ऊंची होती जाती है। यहां चौड़े खुले हुये वृक्ष रहित ऊंचे मैदान हैं। इनके बीच में जहां तहां पहाड़ियां बिखरी हुई हैं। धुर दक्षिणी सिरे पर पहा-ड़ियां फिर प्रगट हो जाती हैं। राजमहल के समीप

(जहां बानास नदी इन पहाड़ियों को चीरती हुई आगे बढ़ती है) इन पहाड़ियों का दृश्य बड़ा मनोहर है। करौली की सीमा के पास राज्य के दक्षिणी-पूर्वी भाग में छोटी पहाड़ियों की भरमार है। यहां गहरे कटे हुये सूखे नाले हैं। जैपुर नगर से पूर्व ही पहले सपाट उतार है प्रथम दो तीन मील में भूमि तीन चार सौ फुट नीची हो गई है। फिर क्रमशः उतार है। यहीं बान गङ्गा को घाटी है जो भरतपुर राज्य की ओर बहती है।

बानास जैपुर राज्य की सबसे बड़ी नदी है। यह ११० मील तक इस राज्य में होकर बहती है। डाइन, माशी ढोल, गालत्र और मोरेल इसकी सहायक नदियां हैं। बांदी नदी माशी में मिलतो है। ढूंढ और खारी मोरेल की सहायक नदी हैं। अमान-शाह नदी ढूंढ में मिलती है। जैपुर शहर में पीने के लिये इसी नदी से पानी आता है। चम्बल नदी जैपुर राज्य की दक्षिणी-पूर्वी सीमा बनाती है और इस राज्य को कोटा और ग्वालियर राज्यों से प्रथक करती है। बान गङ्गा ६० मील तक इस राज्य की नदी है। पहले यह दक्षिण-पूर्व की ओर और फिर यह ठीक पूर्व की ओर बहतो है।

बहती है। मेंढ नदी सांभर झील में गिरती है। साबी या साहिबी नदी उत्तर-पूर्व की ओर बहती हुई पहले जैपुर से अलवर राज्य में प्रवेश करती हुई गुरगांव जिले में प्रवेश करती है। फिर यह कोटकासिम को पार करती हुई गुरगांव जिले में प्रवेश करती है। कान्तली या कातली नदी उत्तर की ओर प्रायः ६० मील तक शेखावटी जिले में बहती है और बीकानेर की सीमा के पास बालू में समाप्त हो जाती है। जैपुर राज्य की सभी छोटी छोटी नदियां गरमी की ऋतु में सूख जाती हैं। इस राज्य की सीमा के पास सांभर झील है। सांभर झील के पूर्वी भाग पर जैपुर और जोधपुर राज्यों का सम्मिलित अधिकार है।

जैपुर राज्य के बहुत बड़े भाग में कछारी (कांप) मिट्टी बिछी हुई है। उत्तरी-पूर्वी भाग में पथरीली चट्टानें हैं। तोरावतो की पहाड़ियों में दानेदार और दूसरे पत्थर हैं। अर्वली के उत्तरी सिरे पर खेतड़ी और सिंघाना में तांबे की खानें हैं। खेतड़ी से ७ मील दक्षिण की ओर बबई में जस्ता और कोबाल्ट पाया जाता है। कच्ची धातु को यहां सेहता कहते हैं। हिंडौन के पास करवर में

लोहे की खानें हैं। राजमहल के पास अर्वली की प्राचीन चट्टानों में गार्नेट (मणि) एकत्रित की जाती है।

जलवायु

जैपुर राज्य की जलवायु खुश्क और स्वास्थ्यकर है। ग्रीष्म ऋतु में शेखावटी और राज्य के उत्तरी भाग में पश्चिम की ओर से प्रबल आँधियाँ चला करती हैं। इस ओर दिन के समय अधिक गरमी रहती है। सूर्यास्त होने पर बालू से गरमी शीघ्र ही निकल जाती है। इस लिये रात्रि का समय बड़ा सुहावना हो जाता है। प्रातः-काल को कुछ ठंड भी हो जाती है। जैपुर शहर का औसत तापक्रम ७७ अंश फारेनहाइट है। जनवरी के महीने में यहां का तापक्रम ५६ और जून में ६१ अंश फारेन हाइट तक हो जाता है। यहां अधिक से अधिक परम तापक्रम ११४ अंश और कम से कम अल्प तापक्रम ३७ अंश फारेनहाइट रहा है। इस राज्य में वर्ष भर में २३ इंच वर्षा होती है। इसमें २० इंच वर्षा जुलाई, अगस्त और सितम्बर मास में होती है। शेष ३ इंच

वर्षा दूसरे महीनों में होती है। पर राज्य के सब भागों में समान वर्षा नहीं होती है। उत्तरी भाग में १५ इंच से १८ इंच तक वर्षा होती है। पश्चिम की ओर २१ इंच वर्षा होती है। जैपुर शहर के समीप २५ इंच पानी बरसता है। दक्षिणी-पूर्वी भागों में ३१ इंच तक वर्षा हो जाती है। इस राज्य में एक बार १८६२ ई० में ५५ इंच और १६०१ में केवल ४ इंच वर्षा हुई।

बनस्पति

जैपुर राज्य के २८३ वर्ग मील में वन हैं। इस बन का कुछ (७१ वर्ग मील) भाग रक्षित है। अधिकतर सवाई जैपुर और माधोपुर निज़ामतों में स्थित है। इस राज्य के बन में अच्छी लकड़ी के पेड़ों की कमी है। अधिकतर पेड़ बबूल, बेर, ढाक, ढोकरा, गूलर, जामुन, खैर, नीम, पीपल, शीशम और बांस के हैं। बन के कुछ भाग में आज्ञा मिलने पर पशु चराये जाते हैं। यहाँ से राज्य को ईंधन, बांस, घास फल, शहद और लाख मिलती है। बन की रक्षा के लिये

राज्य को प्रायः १० हज़ार रुपया खर्च करना पड़ता है और २५००० रुपये की आय होती है।

कृषि

जलवायु और मिट्टी में भेद होने के कारण राज्य के भिन्न भिन्न भागों में भिन्न-भिन्न उपज है। शेखावटी के बहुत बड़े भाग में बलुई भूमि है। यह बालू हवा के साथ उड़ती हुई कभी कहीं और कभी कहीं एकत्रित हो जाती है। यहां वर्षा की कमी होने के कारण वर्ष भर में केवल एक फसल हो पाती है। यह फसल वर्षा ऋतु में होती है। खेतों में बाजरा मूंग और मोठ उगाने का काम होता है। हल जोतने का काम बैलों के बदले ऊंटों से लिया जाता है। वर्षा होते ही फसल बो दी जाती है और अक्तूबर या नवम्बर मास में काट ली जाती है।

जैपुर नगर के समीप और उत्तर-पश्चिम की ओर प्रायः बलुई मिट्टी है। खरीफ की फसल में यहां बाजरा, ज्वार, मूंग मोंठ होती है। शीतकाल में कुछ गेहूं और जो भी उगाया जाता है। जैपुर नगर के पूर्व में और

बान गङ्गा की घाटी और दक्षिणी जिलों में अधिकतर काली रेगर मिट्टी अथवा उपजाऊ कछारी दुमट है। यहां वर्षा-ऋतु में ज्वार, मक्का, कपास, तिल उगाये जाते हैं। रबी की फसल में गेहूँ, जौ, चना, ईख और पोस्ता होता है। पूर्व की ओर गङ्गापुर जिले में कुछ मोटा धान भी उगाया जाता है।

बाजरा, जौ और ज्वार यहां के लोगों का प्रधान भोजन है। राज्य के जितने भाग में खेती होती है उसका आधे से अधिक भाग ६०० वर्गमील इन फसलों के उगाने के काम आता है। प्रायः २०० वर्ग मील भूमि गेहूँ, १०० वर्गमील कपास ७० वर्गमील चना और ६० वर्गमील भूमि मक्का उगाने के काम आती है। १८६६ और १६०० ई० में यहां भीषण अकाल पड़ा तब से सिंचाई की अधिक सुविधा हो जाने से खेती की मात्रा बढ़ गई है। शेखावटी को छोड़कर कृषि प्रदेश की प्रायः ५०० वर्ग मील भूमि में सिंचाई की सुविधा है। प्रायः ५० वर्गमील भूमि नहरों से २० वर्गमील भूमि तालाबों से और शेष कुओं से सींची जाती है।

राज्य की ओर से सिंचाई पर प्रायः ७० लाख रुपया व्यय हुआ। बान गङ्गा नदी की घाटी में प्रसिद्ध रामगढ़ बांध है। दक्षिण-पश्चिम में मालपुरा नगर के पास तोर्दी सागर है। जैपुर नगर से ६० मील उत्तर की ओर तोरावती पहाड़ियों में बुचार बांध है। इससे इतना पानी रुक जाता है कि १७ वर्ग मील भूमि सींची जा सकती है। यह १८८९ ई० में बना। इसके बनाने में लगभग ३ लाख रुपया व्यय हुआ। जैपुर (नगर) से ३० मील उत्तर-पश्चिम की ओर कलख सागर है। यह १८८३ ई० में बना। इसके बनाने में २ लाख रुपया व्यय हुआ। पूरा भरने पर यह ८ वर्ग मील भूमि सींच सकता है। इससे ५५ मील प्रधान नहरें और ११८ मील राजवाहे (शाखा नहरें) निकली हैं। पूर्व की ओर हिंडौन जिले में फतेह सागर है। इसके बनाने में १५००० रुपये से कम व्यय हुआ। इससे राज्य को प्रायः डेढ़ लाख रुपये की आय होती है।

देश दर्शन

पशु

इस राज्य में पशुओं की संख्या अधिक नहीं है। राजधानी के समीप जङ्गली सुअर और हिरण बहुत मिलते हैं। सवाई माधोपुर और जैपुर के जङ्गलों में चीता तेंदुआ, बनबिलाव और सांभर पाये जाते हैं। कुछ काले भालू भी हैं।

जयपुर राज्य में अच्छी जाति की गायों और घोड़ों की कमी है। अधिक अच्छे पालतू पशु बाहर से मँगाये जाते हैं। भेड़ बकरियां बहुत पाली जाती हैं। शेखावटी के ऊँट प्रसिद्ध हैं। वे बड़े मज़बूत और सहन-शक्ति वाले होते हैं।

कलाकौशल

इस राज्य में ऊनी और सूती कपड़ा बुनने का काम बहुत होता है। सादे कपड़े पर छींट छापने का काम भी प्रसिद्ध है। संगमरमर की संगतराशी लकड़ी रंगने मिट्टी और पीतल के बर्तन बनाने का काम भी बहुत होता है। सोने, चांदी और तांबे का भी बढ़िया काम होता है। कपास ओटने और रुई के गद्दे बनाने की इस राज्य में दो तीन मिलें हैं। पीतल की मूर्त्तियां ढालने के काम के लिये जैपुर भारतवर्ष भर में प्रसिद्ध है। संगमरमर की मूर्ति भी बहुत अच्छी बनती है।

जैपुर से नमक, कपास, घी, तिलहन छपे हुये सूती कपड़े, ऊनी कपड़े, संगमरमर की मूर्तियां पीतल के बर्तन और लकड़ी के रंगीन खिलौने बाहर भेजे जाते हैं। सूती कपड़े, शक्कर, तम्बाकू और चाकू, कैंची आदि। धातु का सामान बाहर से आता है। शेखावटी का प्रधान निर्यात ऊन है। अन्न, शक्कर कपड़ा आदि बाहर से आता है शेखावटी से सामान ढोने का काम प्रायः ऊँटों से लिया जाता है राज्य के दूसरे भागों में रेल मोटर आदि अनेक साधन हैं।

———

संक्षिप्त इतिहास

जैपुर के महाराज कछवाहे राजपूत हैं। कहते हैं राजपूतों का कछवाहा वंश श्रीरामचन्द्र जी के पुत्र कुश से उत्पन्न हुआ। इस राजवंश के आरम्भ के इतिहास का ठीक ठीक पता नहीं लगता है। इसके पूर्वज सोन नदी के किनारे रोहतास में बस गये। फिर वे तीसरी शताब्दी में वहाँ से ग्वालियर और नरवर को चले आये। ९७७ ई० में कछवाहा नरेश बज्रदमन ने कन्नौज के एक शासक को ग्वालियर से भगा कर उस पर अपना स्वाधीन राज्य स्थापित कर लिया। ११२८ ई० में बज्रदमन की आठवीं पीढ़ी में उत्पन्न राजा तेज-करन या दूल्हाराय ने ग्वालियर में उनका भानजा राज्य करने लगा। पूर्वी राजपूताना में दूल्हाराय ने दौसा में अपनी प्रथम राजधानी बनाई। इस समय इस राज्य का नाम धूंधर था। जैपुर नगर के पूर्व में पास ही गलता या गालव ऋषि का स्थान है। यहां धूंधू नाम दैत्य की गुफा थी इसी लिये इस राज्य का यह नाम पड़ गया। यह भाग राजपूत और मीन सर-दारों के हाथ में था। यह सब दिल्ली सम्राट के अधीन थे। ११५० ई० में दूल्हाराय के उत्तराधिकारियों के

सुसावत मीना लोगों से अम्बेर छीन कर यहीं अपनी राजधानी बनाई। छः सौ वर्ष तक अम्बेर ही राजधानी रहा। राज्य का नाम भी अम्बेर पड़ गया। कहते हैं दूलहाराय की चौथी पीढ़ी में उत्पन्न राजा यजुन ने पृथ्वीराज की बहिन से ब्याह किया। ११९२ ई० में मुहम्मद गोरी से लड़ता हुआ राजा यजुन वीर गति को प्राप्त हुआ। चौदहवीं शताब्दी के अन्त में राजा उदयकरण के शासनकाल में शेखावटी का किला कछवाहे राजपूतों के हाथ में आ गया।

जब मुग़लों का भारतवर्ष में अधिकार हो गया तब अम्बेर राज्य को मुगल बादशाहों का आधिपत्य स्वीकार करना पड़ा। राजा बहारमल इस राज्य का प्रथम राजा था जिसने मुगलों से सिर झुकाया। उसने १५४८ ई० से १५७४ ई० तक राज्य किया। हुमायूं ने उसे ५००० घुड़सवारों का सेनापति बनाया। बहारमल ने अपनी बेटी हुमायूँ के बेटे अकबर को ब्याह दी। बहारमल का बेटा भगवानदास का मित्र था। भगवानदास ने सरनाल के युद्ध में अकबर की जान बचाई थी। भगवानदास भी ५००० घुड़सवारों का

सेनापति था। कुछ समय तक भगवानदास पंजाब का सूबेदार रहा। १५८५ ई० में उसने अपनी बेटी जहांगीर को ब्याह दी। भगवानदास का गोद लिया हुआ बेटा मानसिंह १५६० में इस राज्य की गद्दी पर बैठा। मानसिंह ने १६१४ ई० तक राज्य किया। राजा मानसिंह मुगल राज्य का सबसे बड़ा अफसर था। वह ७००० घुड़सवारों का सेनापति था उसने मुगलों के लिये उड़ीसा, बङ्गाल और आसाम में युद्ध किया। वह काबुल, बङ्गाल, बिहार और दक्षिण का सूबेदार रहा। राजा मानसिंह ने सचमुच मुगल साम्राज्य का मान बढ़ाया। जैसिंह प्रथम भी इस राज्य का विख्यात राजा था। उसने दक्षिण में औरङ्गजेब की सब लड़ाइयां लड़ीं। वह ६००० घुड़सवारों का सेनापति था पर अन्त में औरङ्गज़ेब उससे जलने लगा। १६६८ ई० में औरङ्गजेब ने जहर दिला कर उसे मरवा डाला। जैसिंह प्रथम के पश्चात् दो राजा साधारण हुये। इनके पश्चात् जैसिंह द्वितीय या सवाई जैसिंह बहुत प्रसिद्ध थे। यह उपाधि मुगल बादशाह की ओर से मिली थी। सचमुच वह अपने समकालीन राजाओं से वीरता और दूसरे

गुणों में सवाये थे। यह उपाधि अब तक चली आती है। सवाई जैसिंह १६९९ ई० में जैपुर की गद्दी पर बैठे। १७४३ ई० तक उन्होंने राज्य किया। वे न केवल सुशासन वरन् विद्या प्रेम और योग्यता के लिये भी प्रसिद्ध थे। उन्होंने संस्कृत के कई ग्रन्थों की रचना करवाई। ज्योतिष से उन्हें विशेष प्रेम था। उन्होंने जैपुर, दिल्ली, मथुरा, काशी और उज्जैन में नक्षत्रों का निरीक्षण करने के लिये वेधशालायें बनवाई। उन्होंने फ्रांसीसी ज्योतिषी डे ला हाइर की तालिकाओं का संशोधन किया और जिज मुहम्मद शाही नाम की नक्षत्रों की तालिका एकत्र की। दिल्ली सम्राट मुहम्मदशाह की उनसे बहुत पटती थी। सवाई जैसिंह के राज्य की राजधानी अम्बर से हटा कर जैपुर नगर में बनाई। १७२८ ई० में वर्तमान जैपुर नगर की स्थापना हुई। चारों ओर विग्रह के वातावरण के होते हुये ही सवाई जैसिंह किस प्रकार इतना रचनात्मक कार्य कर सके यह उनकी अपूर्व प्रतिमा का द्योतक है। उनके समय में मुगलों का सामना करने के लिये जैपुर, जोधपुर और उदयपुर के राज्य एक हो गये। इससे उदयपुर के राजवंश से विवाह सम्बन्ध भी होने लगा।

भरतपुर के जाटों ने राज्य का कुछ भाग दबा लिया। १७९० ई० में मछेरी (वर्तमान अलवर) का राज्य अलग हो गया इससे जैपुर राज्य की सीमा बहुत घट गई। अठारहवीं शताब्दी के अन्त में राज्य में गृह कलह फैली। उधर मरहठों के आक्रमण होने लगे। इससे जैपुर राज्य बहुत निर्बल हो गया। १८०३ ई० में राजा जगतसिंह के समय में जैपुर राज्य ने मरहठों के विरुद्ध ब्रिटिश सरकार से सन्धिकर ली। १८०५ ई० में यह सन्धि ब्रिटिश सरकार ने तोड़ दी। इसका कारण यह था कि जैपुर राज्य ने महाराज होल्कर से युद्ध करने में अँग्रेज़ों का साथ नहीं दिया था। इससे जयपुर और जोधपुर राज्यों में उदयपुर की राजकुमारी से विवाह करने के लिये युद्ध छिड़ गया। इस युद्ध से दोनों राज्य निर्बल हो गये। इसी बीच में अमीर खां अपने पिंडारी लुटेरों से जैपुर राज्य का विनाश कर रहा था। अतः १८१७ ई० में ब्रिटिश सरकार से फिर सन्धि वार्ता आरम्भ हुई। १८१८ ई० में ब्रिटिश सरकार से सन्धि हो गई और जैपुर राज्य ने ईस्टइण्डिया कम्पिनी को ८ लाख रुपये का वार्षिक कर देना स्वीकार कर

लिया। इस प्रकार यह राज्य अँग्रेज़ों की छत्रछाया में आ गया। १८१८ ई० में ही महाराज जगतसिंह की मृत्यु हो गई कुछ महीनों के पश्चात् गर्भवती के पुत्र उत्पन्न हुआ। यही शिशु राजा बनाया गया। वह जैसिंह तृतीय के नाम से प्रसिद्ध हुआ। जब तक वह अल्पवयस्क रहा तब तक राज्य में बड़ी गड़बड़ी फैली रही। १८२० ई० में यहां एक विद्रोह हुआ। इसी समय प्रथम बार यहां एक ब्रिटिश रेजीडेण्ट नियुक्त हुआ। वह जैपुर (राजधानी) में रहने लगा।

१८३५ ई० में महाराजा रामसिंह गद्दी पर बैठे। इसी समय शहर में दङ्गा हो गया। गवर्नर जनरल का एजेंट घायल हुआ और उसका साथी मार डाला गया। इस पर ब्रिटिश सरकार ने कड़ा पन दिखलाया। राज्य का प्रबन्ध करने के लिये पांच सरदारों की एक समिति नियुक्त हुई। यह सब पोलिटिकल एजेण्ट की देखरेख में काम करते थे। सभी मामलों में पोलिटिकल एजेण्ट फैसला देता था। सेना घटा दी गई। १८४२ ई० में ब्रिटिश सरकार ने कर ८ लाख से घटा कर ४ लाख कर दिया १८५१ ई० में महाराजा रामसिंह को पूर्ण

अधिकार मिल गये। गदर के समय में उन्होंने राज्य की समस्त सेना पोलिटिकल एजेंट को सौंप दी। गदर समाप्त होने पर कोट कासिम का परगना उन्हें पुरस्कार में मिला। १८६८ ई० में यहां भीषण अकाल पड़ा इस अवसर पर महाराज ने बड़ी उदारता दिखलाई। उनकी सलामी २१ तोपों की कर दी गई। इससे पहले उनकी सलामी १६ तोपों से होती थी। १८८० ई० में उनकी मृत्यु हो गई। उनके कोई बेटा न था। सवाई माधोसिंह द्वितीय राजगद्दी पर बैठे। इनके समय में शिक्षा, सिंचाई और अस्पतालों में बड़ी उन्नति हुई। १६०२ ई० में सम्राट एडवर्ड के राज्याभिषेक के अवसर पर वे इंगलैंड गये।

जैपुर के पुस्तकालय

जैपुर के राज्य का क्षेत्रफल १५०६१ वर्ग मील है। क्षेत्रफल की दृष्टि से जैपुर का राजपूताना में तीसरा स्थान है। इसकी जन संख्या ३०,४०८७६ है जो राजपूताना राज्यों में सर्व प्रथम है।

जैपुर राज्य में ताँबा, सीसी, जस्ता, अभ्रक आदि खनिज बहुत हैं। वैराट सांभर रैढ, दौसा, चत्स राम गढ़, खंडेला, वर्नाला, विलासपुर और अढनेरी स्थान पुरातत्व की दृष्टि से महत्व पूर्ण हैं। जैपुर के महाराजाओं ने शिक्षा प्रसार में बड़ी सहायता पहुँचाई। जैपुर महल के पोथी खाना पुस्तकालय भिन्न भिन्न विषयों पर प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकें हैं। जैपुर के कुछ राजा कवि, विज्ञान के और विद्वान हो चुके हैं। उन्होंने अपने शासन काल में पंडितों और विद्वानों को बड़ा प्रोत्साहन दिया। महराज पृथिवीराज (१५०२-२०) गालता के श्री कृष्ण देव महन्त कवि के शिष्य थे। इन्होंने जुगल मान चरित, भ्रमर गीता और प्रेम तत्वनिरूपण की रचना की।

देश दर्शन

महाराजा भगवान दास (१५७५-८६) की छत्र छाया में भट्ट लक्ष्मण के पुत्र शम्भू ने लक्ष्मण मंजरी की रचना की।

महाराज मानसिंह (१५८६-१६१४) स्वयं कवि थे इनके समय विख्यात कवि नरहरि और सन्त दादूदयाल जी हुये हैं। दादू जी के उपदेशों का संग्रह दादूजी की वाणी' नाम से राजस्थानी में हुआ है। इसी समय महाराज कोष नामक संस्कृत ग्रन्थ की रचना हुई।

महाराज भवसिंह (१६१४-१६२१) की स्मृति में भव विलास नामक संस्कृति ग्रन्थ रचा गया।

मिरजा राजा जै सिंह (१६२१-६७) तुर्की फारसी, हिन्दी और उर्दू के विद्वान थे। इनके समय में पुराण भक्ति, धर्म, संगीत और वेदान्त पर अनेक ग्रन्थ रचे गये।

बृहदारण्यक टिप्पणी, धर्म प्रदीप भक्ति रत्नावली, भक्ति निर्णय भक्ति विवृत्ति, कर्म निवृत्ति और हस्तकर रत्नावली इन्हीं के समय में रचे गये। महाकवि बिहारी सतसई की रचना की। कहते हैं ८०० दोहों की रचना

पर बिहारी जी को ८०० सोने की मुहरें पुरस्कार में दी गई।

महाराज राम सिंह (१६६७-८९) स्वयं संस्कृत के विद्वान थे। उन्होंने पंडितों को बड़ा प्रोत्साहन दिया। उनके समय में काव्य व्याकरण, आयुर्वेद, धर्म और ज्योतिष पर ग्रन्थ लिखे गये। इनमें राम विलास, धातु मञ्जरी, वैद्य विलास, राजोपयोगिनी पद्धति मुहूर्त तत्व टीका, और जानकी राघव नाटक विशेष उल्लेखनीय हैं। इसी समय हिन्दी में भेद प्रकाश नाटक और फारसी में बोस्ताने खयाल लिखा गया।

महाराज सवाई जै सिंह द्वितीय का शासन काल (१२९९-१७४३) जैपुर राज्य में स्वर्ण काल कहलाता है। महाराज स्वयं साहित्य, गणित और ज्योतिष के विद्वान थे। उन्होंने जैपुर नगर को विद्यापीठ बना दिया। वैदिक वैष्णव सदा चार विधि लिखी गई। महीधर ने राम गीता लिखा रत्नाकर भट्ट ने जै सिंह कल्पद्रुम लिखा प्रतिष्ठा चन्द्रिका को पंडित हरी लाल ने लिखा। सम्राट जगन्नाथ ने प्रसिद्ध ज्योतिष ग्रन्थ सम्राट सिद्धान्त की

रचना की। इसके पुरस्कार में उसे एक जागीर मिली। उन्होंने उकलोंद का भी अरबी से संस्कृत में अनुवाद किया। इसका नाम रेखा गणित रक्खा गया। सोम सिद्धान्त इसी समय गोल गणित विषयक की रचना हुई। इसमें ग्रहण और ग्रहों का वर्णन है। त्रिभाग सारिणी दिग पक्ष सारिणी, तारा सारिणी, आकार रेखा गणित, जै सिंह कारिका, यन्त्र प्रकार, यन्त्र राज विधि की रचना हुई। अरबी में ज्योतिष पर मुन्तहिल इद्रक, मुबादिया, उलयात और नुस्खये नजूम लिखे गये। दक्षिणी ध्रुव और दूसरे तारों का निरीक्षण करने के लिये उसने कुछ विद्वानों को सुदूर द्वीपों को भेजा। उसने जर्मनी फ्रांस और पुर्चगाल के ज्योतिषियों को अपने यहाँ बुलाया।

महाराज ईश्वरी सिंह (१७४३-५१) के समय में विविधौषध संग्रह भक्त माला और श्यामखण्ड की रचना हुई।

महाराज सवाई माधोसिंह (प्रथम) ने विद्वानों का बड़ा सामना किया और उनको आश्रय दिया। उन्होंने

बूंदी राज्य से सभा भास्कर के रचयिता मथुरामल माथुर चतुर्वेदी को अपने यहाँ बुलाया। द्वारकानाथ भट्ट ने गालव गीतम् और वाणी वैज्ञानम की रचना की। कृपाष्टक, संस्कृत मञ्जरी, सुदर्शन स्तुति और महारात्रि विपाक इसी समय लिखे गये।

महाराज सवाई पृथिवी सिंह (१७६७-१७७८) के शासनकाल में देवर्षि भट्ट जगदीश ने हिन्दी में कई पुस्तकें लिखीं। कवि वृजलाल रामलाल को महाराज ने एक जागीर दी।

महाराज सवाई प्रतापसिंह (१७७८-१८०२) के समय में हिन्दी साहित्य की बड़ी उन्नति हुई। महाराज स्वयं हिन्दी के कवि थे। वे वृजनिधि कहलाते थे। कविचक्र चूणामणि पद्माकर जी ने जगद्विनोद और दूसरी पुस्तकें लिखीं। गुमानीराम ने आइने अकबरी का हिन्दी में अनुवाद किया। प्रताप मातण्ड, ध्रुव ब्रह्माख्य यन्त्र, धर्म जहाज और प्रतरपार्क ग्रन्थ इसी समय लिखे गये। कई चारणों और जैन लेखकों को भी प्रोत्साहन मिला।

महाराज सवाई जगतसिंह (१८०३-१८१८) ने शिवलाल, शम्भूराम, मङ्गलाल, अमृतराम और कजूराम कवियों को जागीरें दीं ।।

महाराज सवाई जैसिंह तृतीय (१८१८-१८३५) के समय में जयवंश और नृपविलास काव्य रचे गये। इनमें जैपुर नरेशों के शौर्य कार्यों का वर्णन है।

महाराज सवाई रामसिंह द्वितीय (१८३५-१८८०) के शासनकाल में साहित्य को नई उत्तेजना मिली। महाराजा स्वयं हिन्दी और संस्कृत के विद्वान थे। वे अंग्रेज़ी और उर्दू भी बोल लेते थे। जब बड़े संगीत प्रेमी थे। उन्होंने काशी से पंडितों को बुलाया और मोद मन्दिर की स्थापना की। सज्जन-मनुरञ्जनम् में विद्वानों का वादा विवाद है। पंडित राजीवलोचन ओझा ने धर्म चन्द्रोदय रचा, इसी समय संगीत रत्नाकर और संगीत कल्पद्रुम लिखे गये।

हिन्दी में सुन्दरलाल भट्ट ने कलयुग रस सांच-कूठ वरनाम और मायाद विनोद ग्रन्थ लिखे।

महाराज सवाई माधोसिंह द्वितीय (१८८०-१९२२)

के शासनकाल में पंडित मधुसूदन सरस्वती ने वैदिक ज्ञान सम्बन्धी अनेक संस्कृत ग्रन्थ रचे। राजवैद्य कृष्ण भट्ट ने कच्छ वंश महा काव्य जैपुर विलास, सिद्ध भैषज्य मणिमाला की रचना की। इसी समय बिहारी-सतसई के ढंग पर जैपुर विहार लिखा कई संस्कृत ग्रन्थ भी सम्पादित हुये।

पोथीखाना—राज्य का पुस्तकालय पोथीखाना नाम से प्रसिद्ध है। कहते हैं राजा मानसिंह ने १५६२ ई० में राज पुस्तकालय के लिये अम्बेर में एक भवन बनवाया। उसके बाद हस्तलिखित पुस्तकों की संख्या इस पुस्तकालय में बढ़ती ही गई। महाराज जयसिंह द्वितीय ने इसमें बड़ी वृद्धि की। राज दरबार के कवियों ने जो काव्य लिखें वे तो यहां रक्खे ही गये उसके अतिरिक्त उन्होंने १७०४ ई० में ७६ हस्तलिखित पुस्तकें मोल लीं। १७११ में ४२० और १७७६ में ३३६ पुस्तकें मोल ली गईं।

जब आमेर से राजधानी बदल कर जयपुर नगर में हो गई। तब पोथीखाना भी इसी नगर में चला आया। वर्तमान पुस्तकालय में संस्कृत, हिन्दी और

फारसी की हज़ारों पुस्तकें हैं। वेद, पुराण, धर्मशास्त्र काव्य, व्याकरण, कोष, छन्द, संगीत, इतिहास, दर्शन, ज्योतिष, राजनीति, वैद्यक आदि अनेक विषयों पर पुस्तकें हैं। इनमें कुछ हस्तलिखित हैं। यहां फारसी में रामायण और महाभारत का अनुवाद है। महाभारत को फारसी में रज़्मनामा कहते हैं। १५८२ ई० में सम्राट अकबर की आज्ञा से महाभारत का फारसी में अनुवाद किया गया था।

अब्दुलकादिर बदायुनी, नकीब खां, मुल्लाशेरी और सुल्तान हाजी थानेश्वरी ने अनुवाद किया था। शेख फैजी ने गद्य की। यह चित्रों से सुसज्जित किया गया। अब्बुल फज़ल ने इसकी भूमिका लिखी। जैपुर का रज्मनाना ख्वाज़ा इनायतुल्ला दौलताबादी कागज़ पर लिखा इसमें १६६ चित्र हैं। चित्रों पर चित्रकारों के हस्ताक्षर अंकित हैं। रामायण का अनुवाद बदायुनी ने १५८६ ई० में ४ वर्ष के परिश्रम से पूरा किया। जैपुर के प्रति दौलताबादी कागज़ पर लिखी गई है। इसके किनारे सुनहले हैं। इसमें १७६ चित्र हैं। चित्रों

पर ५२ चित्रकारों के हस्ताक्षर हैं। पुस्तक पर जो छाप लगी है उससे जान पड़ता है कि शाह आलम के समय में यह दिल्ली के शाही पुस्तकालय में थी। ऐसा जान पड़ता है कि रामायण और महाभारत की यह फ़ारसी की प्रतियां सम्राट अकबर की निजी प्रतियां थीं। वे कब और किस प्रकार जैपुर पहुँची यह बतलाना कठिन है।

अध्यात्म रामायण और श्रीमद् भगवद्गीता की भी संस्कृत की हस्तलिखित प्रतियां विशेष उल्लेखनीय हैं। बृहदारण्य की टिप्पणी १६२७ ई० में लिखी गई। इसे श्री नित्यानन्दाश्रम ने रचा था। इसमें ४५०० श्लोक हैं।

धर्म प्रदीप को १६२८ ई० में सुन्दर मिश्र ने रचा था। इसमें गृहस्थ धर्म का वर्णन है। महूर्ततत्व टीका ज्योतिष का ग्रन्थ है। इसे पण्डित गणेष ज्योतिषी ने महाराज रामसिंह प्रथम के समय में बनाया था। इसमें विवाह, मन्त्र आदि के शुभ मुहूर्त्त निकालने के नियम दिये हैं। राजोपयोगिनी पद्धति को स्वयं महाराज

रामसिंह प्रथम ने बनाया। इसमें स्मृतियों के आधार पर राजा के कर्त्तव्यों का वर्णन है।

जैसिंह कल्पद्रुम में उपवास, व्रत, तप आदि की विधि दी गई है। इसे महाराजा जैसिंह के गुरु रत्नाकर पुंडरीक ने १७१४ ई० में पूरा किया। प्रतिष्ठान चन्द्रिका में मूर्तियों की स्थापना के सम्बन्ध में रचा। इसमें ५००० श्लोक हैं। वस्तु मंडन में गृहों और नगरों की रचना के नियम दिये हैं। उनके गुण और दोष बतलाये हैं। इसे श्री मंडन ने १७३६ ई० में रचा था। इसमें ८८० श्लोक हैं।

विविधौषध संग्रह में औषधि बनाने के अनेक नियम हैं। इसमें ११६४ पृष्ठ हैं। इसे महाराज ईश्वरी सिंह ने तयार करवाया था।

घोड़ों का नक़शा—महाराज जैसिंह द्वितीय के समय में मुन्नालाल ने लिखा इसमें घोड़ों के रूप रंग, बीमारी इलाज आदि का वर्णन है। इसमें अनेक चित्र हैं।

फारसी की सचित्र रामायण की रचना श्रीराम के

के पुत्र जै नारायण ने १६८६ ई० में आरम्भ की। यह १६८६ ई० में पूरी हुई इसमें अनेक चित्र हैं।

ज़ीच मुहम्मदशाही में ज्योतिष की तालिका है। यह महाराज सवाई जैसिंह की देखभाल में तयार की गई। इसमें महाराज जैसिंह ने ज्योतिष के यन्त्रों का भी वर्णन किया है। बादशाह मुहम्मद शाह को सम्मानित करने के लिये यह नाम रक्खा गया।

महाहाजा पब्लिक लाइब्रेरी में हिन्दी, संस्कृत, उर्दू फ़ारसी, अरबी और अंग्रेज़ी की प्राय: २५,००० पुस्तकें हैं। इनमें ३६६ हस्तलिखित हैं यहां कई देशी और विदेशी पत्रिकायें भी आती हैं। १८६६ ई० में इसकी स्थापना हुई।

कालेज लाइब्रेरी में ११,००० पुस्तकें हैं। १८४४ ई० में इसकी स्थापना हुई।

संस्कृत कालेज लाइब्रेरी में २००० से ऊपर पुस्तकें हैं कुछ पत्रिकायें हैं।

बिरला कालेज लाइब्रेरी पिलानी का श्रीगणेश १६२५ ई० में हुआ इस समय इसमें १५००० हजार से ऊपर पुस्तकें हैं। इसमें कुछ भोजपत्र पर लिखी हुई

हस्तलिखित प्रतियां हैं। प्रायः १०० देशी और विदेशी पत्रिकायें आती हैं। सेठ पोद्दार कालेज लाइब्रेरी नवलगढ़ का आरम्भ १६३१ ई० में हुआ इसमें प्रायः ५००० पुस्तकें हैं।

गार्डन लाइब्रेरी (जैपुर) १६०० ई० में स्थापित की गई। इसमें १०,००० से ऊपर पुस्तकें हैं ७५२ हस्त-लिखित प्रतियां हैं।

सनमती पुस्तकालय को लाला मोतीलाल सिंहो ने १६२० ई० में स्थापित किया इसमें ३०००० पुस्तकें हैं। यह निर्धन विद्यार्थियों के बड़े काम की है।

सरस्वती पुस्तकालय फतेह नगर सीकर १६११ ई० में आरम्भ किया गया। इसमें १४००० पुस्तकें हैं। १०० हस्तलिखित प्रतियां हैं।

पब्लिक लाइब्रेरी खेतड़ी १६०६ ई० में आरम्भ हुई। इसमें प्रायः ६००० पुस्तकें हैं। श्री महावीर लाइब्रेरी सीकर १६०८ ई० में आरम्भ हुई। इसमें भी प्रायः ६००० पुस्तकें हैं। २०० हस्त लिखित हैं। कुछ पत्रिकाएं आती हैं। श्री विद्या वर्द्धन पुस्तका-

लय नवलगढ़, सम्वत् १९६७ में आरम्भ हुआ। इसमें ४५०० पुस्तकें हैं। ६७ हस्तलिखित प्रतियां हैं।

बनस्थली विद्यालय—बनस्थली में लड़कियों के लिये भिन्न-भिन्न विषयों पर प्रायः २००० पुस्तकें हैं।

इनके अतिरिक्त जैपुर राज्य में छोटे छोटे अनेक पुस्तकालय बढ़ रहे हैं।

जयपुर शहर

जयपुर या जय नगर इस राज्य की राजधानी है यह २६°५५ उत्तरी अक्षांश और ७५°५० पूर्वी देशान्तर में स्थित है। यह आगरा से अजमेर को जाने वाली सड़क पर स्थित है। यहीं होकर बम्बई, बड़ौदा और सेण्ट्रल इण्डिया रेलवे जाती है। यह रेल द्वारा अजमेर से ८४ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यह आगरे से १५० मील पश्चिम की ओर हैं। दिल्ली यहां से १९१ मील उत्तर-पूर्व की ओर है। यहां से बम्बई ६९९ मील दक्षिण-पश्चिम की ओर है। जैपुर राजपूताना भर में सबसे बड़ा नगर है। इस नगर का क्षेत्रफल ३ वर्ग

मील से ऊपर है। इसकी जन संख्या प्रायः पौने दो लाख है।

जैपुर नगर का नाम महाराज सवाई जैसिंह की स्मृति में पड़ा। उन्होंने इस नगर को १७२८ ई० में बसाया। यह उत्तर-पश्चिम और पूर्व की ओर छोटी छोटी पहाड़ियों से घिरा हुआ है। केवल दक्षिण की ओर पहाड़ियां नहीं हैं। प्रधान नगर एक छोटे मैदान पर बसा है। कहा जाता है। कि यह मैदान एक छोटी झील की तली है और झील के सूख जाने से बन गया। उत्तर-पश्चिम की ओर एक ५०० फुट ऊंची पहाड़ी के सिरे पर नाहरगढ़ का किला बना है। यह पहाड़ी नगर की ओर सपाट है। आमेर की ओर क्रमशः ढो गई है। जैपुर नगर चारों ओर से २० फुट ऊँची और ९ फुट मोटी चारदीवारी से घिरा है। इस चारदीवारी में ७ दरवाज़े हैं। नगर की सड़कें बड़ी सुन्दर और सीधी हैं। इनके दोनों ओर बड़े सुहावने गेरुआ (लाल) रंग के भवन बने हैं। बड़ी सड़कों ने इसे छः सामान भागों में बांट दिया है। इनके बीच बीच में छोटी सड़कें हैं। महाराज का प्रासाद (महल) बीच

में बना है। यह बहुत ही भव्य और बड़ा है। यह समस्त शहर के क्षेत्रफल का सातवां भाग घेरे हुये है। शहर आयताकार है। प्रधान सड़कें १११ फुट चौड़ी हैं। छोटी सड़कें ५५ फुट चौड़ी हैं। गलियां २७॥ फुट चौड़ी हैं। उत्तर की ओर ताल कटोरा (ताल) है। इस ताल का क्षेत्रफल १०० एकड़ है। इसमें मगर पाये जाते हैं। कुछ ही दूरी पर यंत्रशाला (यन्त्र मन्त्र) है नक्षत्रों का निरीक्षण करने के लिये इसे महाराज सवाई जैसिंह ने बनवाया था। इसके चरम और दूसरे यन्त्र बहुत ही विशाल बने हैं। इनकी कुछ वर्ष पहले मरम्मत हुई थी।

शहर में पीने का पानी अमान शाह नदी से आता है जो चांदपाल दरवाज़े से डेढ़ मील पश्चिम की ओर है पम्पों द्वारा यह पानी १०६ फुट ऊंचा चढ़ाया जाता है। वहां यह एक बड़ी टंकी में जमा किया जाता है। यहां से यह नलों के द्वारा शहर के भिन्न भिन्न भागों में पहुँचता है।

जैपुर नगर संगमरमर की संगतराशी, कपड़ों के रंगने, पीतल और तांबे के बर्तनों के बनाने के लिये

प्रसिद्ध है। यहां सूती कपड़ा बुनने और कालीन बनाने का भी काम होता है। शहर के बाहर कपास ओटने और रुई के गट्ठे बनाने की मिलें हैं। जैपुर शिक्षा और व्यापार का एक बड़ा केन्द्र है। यहां महाराजा कालेज और कई स्कूल हैं।

जैपुर पर एक फ्रांसीसी की दृष्टि

अब से प्रायः ८ वर्ष पहले लूई रूसेल (Louis Rousselet) नामी एक फ्रांसीसी यात्री ने भारतवर्ष के देशी राज्यों की यात्रा की थी। जैपुर से सम्बन्ध रखने वाला अंश पाठकों के लिये मनोरंजक होगा। अतः उसका सार यहां दिया जाता है।

हमारा बंगला नगर से २ मील की दूरी पर रेगिस्तान की ठीक सीमा पर था। हमारे बंगले और विशाल सूखे नंगे रेतीले रेगिस्तान के बीच कुछ ही पेड़ थे। हरियाली का मरुद्यान (नखलिस्तान) जो जैपुर के चारों ओर कुछ मील तक फैला हुआ है अधिक पुराना

नहीं है। रेगिस्तान की बालू उड़ कर किले की दीवारों तक पहुँचती थी। फिर धीरे धीरे यह बालू पीछे हटा दी गई। इसके ऊपर वृत्त लगा दिये गये कुछ समय में सुन्दर बगीचे बन गये। रेगिस्तान के पीछे हटाने और वृक्षों के बढ़ाने का काम अब भी चालू रहा है। जब से यह कृत्रिम वन तैयार हुआ तब से वर्षा निश्चित समय पर होने लगी है। पोलिटिकल एजेण्ट के बङ्गले के चारों ओर कई एकड़ का बगीचा है।

सब विदेशियों को किसी राजा की राजधानी में ठहरने के लिये अंग्रेज एजेण्ट की आज्ञा लेनी पड़ती है। इसलिये मैंने सर्व प्रथम जैपुर दरबार में पोलिटिकल एजेण्ट कैप्टेन बेनन से भेंट की। कैप्टेन ने बड़ी कृपा से मेरा स्वागत किया और शाम को राजा साहब ने हमारे लिये एक गाड़ी भेज दी। एक नौकर ने सूचना दी कि पावरोटी और बरफ प्रतिदिन राज महल से आ जाया करेगी। यह चीज़ें किसी भी मूल्य पर जैपुर बाज़ार में नहीं मिल सकती थीं। अप्रैल का महीना था। गरमी की ऋतु आरम्भ हो गई थी। हम लोगों ने यहीं ठहर कर वर्षा ऋतु बिताने का निश्चय किया।

देश दर्शन

प्राचीन धौंधर राज्य की राजधानी होने पर भी जैपुर नगर नया है। इसे जैसिंह द्वितीय ने १७२८ ई० में बसाया। महाराज जैसिंह भारतवर्ष के प्रतिभाशाली व्यक्तियों में से थे। वे सवाई जैसिंह कहलाते थे। १६९९ ई० में वे आम्बेर की गद्दी पर बैठे। औरंगज़ेब की नौकरी करने के बाद उन्होंने औरंगज़ेब के मरने पर गद्दी के हकदार एक शाहजादे की सहायता की। पर धौलपुर की लड़ाई में उनके पक्ष की हार हो गई। नये बादशाह आलम ने उनके राज्य को ज़ब्त करने की आज्ञा निकाल दी। अतः उन्हें अपना राज्य फिर से जीतना पड़ा। उन्होंने शाही सेनाओं को मार भगाया। जिन महापुरुषों ने हिन्दू जाति की शोभा बढ़ाई है। उनमें महाराज जैसिंह की गणना प्रथम कोटि में है वे वीर योद्धा ही न थे। वरन् वे राजनीतिज्ञ विधान वेत्ता और विद्वान थे। उन्हीं के कारण जैपुर राज्य को इतना राजनैतिक महत्व मिला है। उन्होंने राज प्रबन्ध में कई नई उपयोगी बातें चलाई और प्रजा की दशा सुधारी, प्राचीन राजधानी आम्बेर नगर कालिखो पर्वत की एक तंग कन्दरा में घिरा हुआ है। वह नवीन राज्य

की शानदार राजधानी के योग्य न था। अतः उन्होंने वैद्यधर नामी बंगाल के एक जैन की सम्मति से जैपुर या जै नगर नाम की एक नई राजधानी बनाई। यह नया नगर आम्बेर से ४ मील दूर है। दोनों के बीच में उन्होंने एक किले की एक पंक्ति बना दी। जैपुर नगर में उन्होंने सीधी सुन्दर सड़कें बनाई। सड़कें इतनी चौड़ी हैं जो आजकल के योरुपीय नगरों से मिलती हैं। यहां कला-कौशल और विज्ञान की इतनी उन्नति हुई कि कुछ ही समय में जैपुर भारतवर्ष की दूसरी राजधानियों से कहीं आगे होगया। पर ज्योतिष विद्या को उन्नत करके महाराज जैसिंह ने अपने को अमर बना दिया। बादशाह मुहम्मद शाह की आज्ञा से उन्होंने हिन्दू पंचांग को सुधारने का काम अपने हाथ में लिया। इस काम को पूरा करने के लिये उन्होंने दिल्ली, उज्जैन, बनारस, मथुरा और जैपुर में आलीशान वेधशाला बनवाई। आरम्भ में उनके पास ज्योतिष के अध्ययन के लिये केवल फारसी यन्त्र थे। आगे चलकर उन्होंने नये यन्त्रों का आविष्कार किया। इनसे उन्होंने एक दम शुद्ध ज्योतिष की तालिकायें तैयार की। जब उन्हें पता

लगा कि पुर्चगाल में एक ज्योतिषी है तो उन्होंने एक वैज्ञानिक राजदूत भेज कर उसे पुर्चगाल से बुलवा लिया राजा ने पुर्चगाली तालिका जांच की और उसमें जो अशुद्ध थी वह बतला दी उनमें ताम्सुब बिलकुल न था। अतः उन्होंने बादशाह को सम्मानित करने के लिये ज्योतिष की नई तालिका का नाम जै मुहम्मद शाही रक्खा। उन्होंने गणित के कई ग्रन्थों का अनुवाद संस्कृत में करवाया। इन्हीं महाराज ने जैपुर नगर की नींव डाली। उसने इस नगर के स्थान को भारत के दूसरे नगरों में बहुत ऊँचा कर दिया। जैपुर की सुदृढ़ लाल चार दीवारी बाहर से पहले दिखाई देती है। थोड़ी थोड़ी दूर पर गोल और मोटे गुम्बदों ने इसे और दृढ़ बना दिया है। इनके ऊपर महल और मन्दिर दिखाई देते हैं। नगर की रूप रेखा बहुत सादी है। प्रधान सड़क एक मील से अधिक लम्बी है। यह प्रायः ४० गज़ चौड़ी है। यह सड़क नगर के भीतर होकर जाती है। इतनी ही चौड़ी दूसरी सड़कें समकोण बनाती हुई इसे काटती हैं। प्रत्येक चौराहे के पास बाज़ार लगता है।

नगर अपूर्व शान का बना है। साधारण घर भी

चमकदार लुज्जों से ढके हैं। सरदारों और धनी मानी घरों के सामने संगमरमर का काम है। सड़कों पर पत्थर का फर्श लगा है। पैदल चलने वालों के लिये किनारों पर पगडंडियां हैं। इन्हीं चौड़ी पगडंडियों पर खड़े होकर लोग सौदा खरीदते हैं। दूकानें सब कहीं घरों की निचली मंज़िल में हैं। सड़कों की सफाई और सुन्दरता में भारतवर्ष का कोई नगर जैपुर से टक्कर नहीं ले सकता। जिस समय जैपुर नगर बना था उस समय योरुप का भी कोई नगर जैपुर की टक्कर का ना था। राज महल एक ऊँची दीवार से घिरा हुआ है। राज-महल के भवन रमणीक बगीचों के बीच में बने हैं। नगर का प्रायः आधा भाग राजमहलों से घिरा हुआ है। मध्य युग के दर्शनीय स्थानीय पुरानी राजधानी आम्बेर नगर में मिलते हैं।

महाराज जैसिंह ने राजमहल का घेरा स्वयं बनवा दिया था। उसके उत्तराधिकारियों ने समय समय पर इसके भीतर भव्य भवन बनवाये। पर जो भवन सवाई जैसिंह ने बनवाये उनकी टक्कर का इन नये भवनों में कोई नहीं है। चन्द्र महल बीच में है। यह एक सिरे

मिड के आकार का बना है। इसके सामने आम और सन्तरों का बगीचा है। बीच बीच में सुन्दर ताल है। यह रमणीक झरनों से सुसज्जित हैं। निचली मंज़िल में दीवान खास है। यह भारतवर्ष के सुन्दर भवनों में एक है। चन्द्र महल के बाईं ओर कुछ बड़ी बड़ी इमारतें हैं। यह चटकीले रंगों मे रंगी हैं। यहीं राजा का निवास स्थान, जनाना है। यहीं कुछ कमरों में महल के मन्त्रियों का दफ्तर है। यहीं मीनार के सामान एक ऊँचा गोल बुर्ज है। यह १८२० ई० में बनाया गया था। चन्द्र महल से कुछ दूर पूर्व की ओर वेधशाला है। यह एक विशाल आंगन सा है। इसमें ज्योतिष का अध्ययन करने के लिये बड़े बड़े यन्त्र बने हैं जिनका आविष्कार सवाई जैसिंह ने किया था। इसमें तांबे के चक्र और संगमरमर के स्तम्भ हैं। दीवारें त्रिज्या-भुज चापों के रूप में बनी है। सम्पूर्ण दृश्य जादू सा मालूम होता है। रात्रि के समय अपने राजा को नपे हुये पगों के साथ तारों की गति का अध्ययन करते देख कर दरबारी लोग बड़े विस्मित हो जाते होंगे। पर इस विद्वान राजा के उत्तराधिकारी इतने योग्य न निकले। यह उपयोगी यन्त्र बिना

मरम्मत के पड़े रहे। कुछ हस्तलिखित प्रतियां और यन्त्र नष्ट हो गये। वर्तमान राजा ने इन्हें सुधारने का यथा-शक्ति प्रयत्न किया। पर यन्त्रों को कोई फिर से न बना सका। दिल्ली की वेधशाला जैपुर की वेधशाला से छोटी है। एक लेखक ने दिल्ली की वेधशाला का वर्णन इस प्रकार किया है। जैसिंह सम्राट यन्त्र या विषुवत रेखा चक्र बहुत बड़ा है। इसका करण ११८ फुट ५ इंच लम्बा है। आधार की लम्बाई १०४ फुट है।

इसका लम्ब ५८ फुट है। इस भवन से कुछ दूरी पर एक दूसरा गोल घर है। इसके बीच में ज़ीना है इस पर से एक ऊंची वेदी को मार्ग गया है। यहां रेखायें आरम्भ होती हैं। दक्षिण की ओर पत्थर की ३० रेखायें बनी हैं। यह एक स्तम्भ से आरम्भ होती हैं। सिरों पर छाया द्वारा सूर्य की उंचाई नापने के अंश बने हैं। जैपुर की वेधशाला इससे कहीं अधिक बड़ी है। वेधशाला के पास ही अस्तबल हैं। यहां से हवा महल को मार्ग गया है। इस महल से नीचे की ओर जयपुर का एक प्रधान बाज़ार दिखाई देता है। यहीं सवाई जैसिंह का निवास-स्थान था। यहीं उन्होंने जटिल

गणनाओं की पूर्ति की थी। यहां उन्होंने अपनी प्रजा की समस्याओं का अध्ययन किया था। इस महल के कमरों के भीतर भिन्न-भिन्न रंग के संगमरमर के पत्थर लगे हैं। सिरों पर सुनहरी लकीर है। आंगन के बीच में फव्वारा लगा है। इसकी शीतलता का प्रभाव कमरों तक पहुँचता है। यह इमारत छः मञ्जिला है पर तीन मंजिल दिखावटी हैं।

इसकी चोटी से समूचा जैपुर नगर दिखाई देता है। यहां से सड़कों का दृश्य कुछ कुछ पेरिस के समान दिखाई देता है। ज़ीनों के ऊपर हज़ारों रंग के झंडे फह-राते हैं। पश्चिम और उत्तर की ओर कालीखो पर्वत की हरी घाटियां हैं। चोटियों पर प्राचीन आम्बेर की किले बन्दी है। पूर्व और दक्षिण की ओर अपार रेगिस्तान है। दृश्य बड़ा मनोहर है। जहां पहले नंगा और वीरान रेगिस्तान था वहां सवाई जैसिंह ने अपने प्रयत्न से कैसा हरा भरा कर दिया। इनके अतिरिक्त यहां अनेक बगीचे और दर्शनीय स्थान हैं।

एक दिन हम लोगों ने पोलिटिकल एजेण्ट की सहायता से महाराज रामसिंह से भेंट की। महाराज ने

हमें अपने समीप बिठाया दरबारी लोग सिंहासन के दोनों ओर बैठे थे। महाराज रामसिंह का क़द नाटा था। उनकी अवस्था ४५ वर्ष की थी। उनका चेहरा बड़ा आकर्षक था। उनमें असाधारण बुद्धि थी। उनके वस्त्र बड़े सुन्दर थे। कुछ आभूषण भी थे। पर वे तलवार के बदले कमर में एक बड़ा रिवाल्वर लटकाये हुये थे। पेटी से चाबियों का एक गुच्छा भी लटक रहा था। उन्होंने मुझ पर बड़ी दया दिखलाई और उन दरबारों का हाल पूछा जहां मैं हो चुका था। वे कला और फोटोग्राफी में बड़े दक्ष थे। फोटोग्राफी पर उन्होंने कई प्रश्न पूछे। फिर उन्होंने फ्रांस के सम्बन्ध में कई प्रश्न किये। एक कर्मचारी गुलाबजल और पान ले आया। पान लेकर हम लोगों ने महाराज से बिदा मांगी। महाराज सिंह कछवा (कच्छप) राजवंश के हैं। इनका सम्बन्ध सूर्यवंश और श्री रामचन्द्रजी से है। २२५ ई० में इसी वंश का एक राजा पश्चिम की ओर आया और निशीद (नरवर) में ठहर गया। यह ग्वालियर की तीसरी राजधानी थी। ९६७ ई० में अन्तिम राजा के बेटे ढोलाराय को एक विरोधी ने भगा

दिया। उन्होंने धौंधर के मीनाओं के यहां शरण ली। मीनाओं ने उनके साथ अच्छा बर्ताव किया अन्त में वे उनके देश में राजा हो गये। मुसलमानों के आक्रमण होने पर कछवा राजपूतों ने उनसे सबसे पहले मित्रता कर ली। अकबर के शासनकाल में भगवानदास ने अपनी एक लड़की सलीम (जहांगीर) को व्याह दी। इससे कछवा वंश राजपूत राजपूताना के दूसरे राजपूतों की नज़रों में गिर गये।

जैपुर राज्य के प्राचीन स्वामी मीना लोग थे। उदयपुर के भीलों की भांति मीना लोग जैपुर के मूल निवासी थे। धौंधर के मीना लोग पांच जातियों में विभक्त थे और पंचवाड़ा कहलाते थे। वे कालिखा पर्वत की समस्त श्रेणी पर अजमेर से दिल्ली तक बसे हुये थे। इनके प्रधान नगर आम्बेर, खोगांव और मौच थे। भीलों की अपेक्षा वे अधिक समय तक स्वाधीन रहे। तेरहवीं शताब्दी तक उनकी कुछ स्वाधीनता बनी रही। वे प्रायः पहाड़ी भाग में रहते हैं। उनके गांव पाल कहलाते हैं। वे धनुष बाण और लाठी लेकर बाहर चलते हैं। उनकी लाठी में लोहा जड़ा रहता है। वे खेती की

अपेक्षा शिकार अधिक पसन्द करते हैं। कुछ मीना कभी कभी लूट मार भी कर डालते हैं। उनका रंग सांवला और बाल बहुत लम्बे होते हैं। इनका आकार बहुत सुडौल होता है। भीलों की अपेक्षा वे अधिक बुद्धिमान होते हैं।

जैपुर की जलवायु राजपूताना में सब से अधिक स्वास्थ्यकर है। पर यह बहुत प्रिय नहीं लगती है। दक्षिणी भागों की अपेक्षा यहां की ऋतु अधिक स्पष्ट है। शीतकाल में कभी-कभी विकराल जाड़ा पड़ता है। कभी-कभी तो तापक्रम इतना गिर जाता है कि प्रातःकाल को पाला पड़ जाता है। जनवरी बीतने पर कुछ गरमी आरम्भ हो जाती है। मार्च मास में गरम हवायें चलने लगती हैं। उत्तर से आने वाली धूल भरी तेज़ आंधी से मेवात और जाट प्रान्तों में बहुत हानि होती है। आकाश का रंग लाल और पीला हो जाता है। इनके बाद फिर पश्चिम की ओर चलने वाली अधिक गरम लू चलती है। ईरान, बिलोचिस्तान और मरुस्थान के सैकड़ों मील लम्बे रेगिस्तान के ऊपर से आने के कारण इनकी गरमी और अधिक बढ़ जाती है। यह हवायें इतनी गरम होती

है कि भूमि की घास झुलस जाती है। वृक्षों के पत्ते सूख कर गिर जाते हैं। हरियाली का बढ़ना तो उनके आते ही बन्द हो जाता है। यह लू लगातार एक महीने तक चलती है। इसमें कोई योरुपीय बंगले के बाहर निकलने का साहस नहीं करता है। पश्चिम के सभी दरवाज़े और झरोखे बन्द रखने पड़ते हैं। कुछ लोग खस की टट्टी लगाते हैं। इन टट्टियों को कुली सदा भीगा रखते हैं। वे दिन रात इन पर पानी छिड़कते रहते हैं। भीगी टट्टी को पार करके जो हवा भीतर आती है उसकी गरमी कम हो जाती है। उसमें ताज़गी आ जाती है।

संध्या समय हवा प्रायः बन्द हो जाती है। वह गरमी और भी असह्य हो जाती है। उस समय भीगी टट्टियां भी घर के भीतर की हवा को ठंड नहीं कर पाती है। पंखों के चलने पर भी गरमी शान्त नहीं होती है। टट्टियों से घिरे हुये अंधेरे कमरे में दिन भर बन्द रहने के बाद केवल शाम को सूर्यास्त होने पर कुछ समय के लिये मनुष्य बाहर निकल सकता है। रात्रि को सब लोग बाहर सोते हैं। प्रातःकाल उठने पर आंख, कान

और मुँह बारीक बालू से भरा हुआ मिलता है। वायु मंडल में लगातार धूल भरी रहती है। सब लोग दक्षिण-पश्चिम की ओर बड़ी चिन्ता से देखते हैं और बादल अथवा प्रथम वर्षा का आनन्द से स्वागत करते हैं। दो तीन बार वर्षा की बोछार हो जाने पर दृश्य एक दम जादू के समान बदल जाता है। बालू हरी घास मुलायम घास के बिछौने के नीचे बैठ जाती है। वृक्ष हरी पत्तियों से ढक जाते हैं। हवा बड़ी मनोहर और ताज़ी हो जाती है। प्रकृति जग जाती है। जहां कल झुलसाने वाली बालू का समुद्र था वहां आज मनोहर हरियाली का राज्य हो जाता है। सब कहीं हरे खेत दिखाई देते हैं। वर्षा में आनन्द आता है। मानसूनी वर्षा ने हमें स्वाधीनता दे दी। अब हम प्रतिदिन बाज़ार को जा सकते थे और कुछ घंटे महल में बिता सकते थे। महाराज साहब फ्रांसीसी शासन के सम्बन्ध में अनेक प्रश्न पूछते थे। भेंट के समय पंडित और बख्शी (सेना पति) सदा उपस्थित रहते थे। यह दोनों बड़े बुद्धिमान थे और महाराजा को सर्वोत्तम सम्मत्ति देने वाले मन्त्री थे। सिद्धान्त के अनुसार योरुपीय लोगों

के विरुद्ध होने पर भी वे उनका बड़ा आदर करते थे। अधिक शिक्षित न होने पर भी वे योरुप और पश्चिमी देशों के बारे में बहुत सी बातें जानते थे। बंगाल के दो तीन बाबुओं से हमारी मित्रता हो गई। यह स्कूल में पढ़ाते थे। जब पोलिटिकल एजेण्ट के लाने में पार्टी होती थी तब सुन्दर बैंड बजता था। इसका नेता एक जर्मन था। जैपुर के पड़ोस में शिकारी पशु, पक्षी बहुत हैं। वृक्षों और झाड़ियों में नाना भांति के पक्षी शब्द करते हैं। जंगली सुअर भी बहुत हैं। पड़ोस के मैदान और सूखे नालों में हिरणों के झुण्ड मिलते हैं। हम लोग कालिखो पर्वत की कन्दराओं में छिपे हुये चीते और तेन्दुओं का शिकार करने जाते थे।

वर्षा समाप्त होने और मार्गों के सुगम होने पर जादूगर तरह तरह का तमाशा दिखाने के लिये इधर उधर से आने लगे। कुछ नट और संपेरे भी मन बहलाते थे कुछ लोग तलवार और छुरी से तरह तरह के खेल दिखाते थे। कुछ छोटी लड़कियां पीठ की ओर उल्टी मुड़कर गेंद की तरह गोल हो जाती हैं और अपनी आंखों से बालू में गड़े हुये दो तिनके उठा लेती
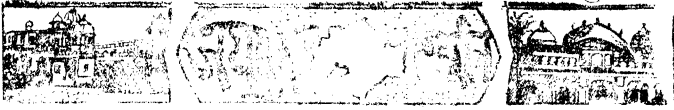
हैं। उनको आंख में पट्टा बंधी होने पर भी वे अपने पैर के अंगूठे से सुई में डोरा डाल लेती हैं।

इस समय जैपुर में तरह तरह के साधू भी आते हैं। कुछ भस्म लगाये रहते हैं। कुछ एक हाथ सदा ऊंचा किये रहते हैं। कुछ झुण्ड में रहते हैं और बाज़ार में ताबीज़ बेचते हैं। कुछ उल्टे लटके रहते हैं। अगस्त में गणेश उत्सव के समय में सारा नगर सजाया जाता है। घरों और महलों में झण्डे लग जाते हैं। चौराहों पर फूल और पत्ते सजाये जाते हैं। मेला महल के चारों ओर लगता है। समस्त राजपूताना और योरुप की चीज़ें यहां बिकने आती हैं। तिब्बत की शाल, बुन्देलखण्ड के गुलूबन्द, बनारस की किमखाब, बङ्गाल की मलमल, मैन्चेस्टर के खाकी कपड़े, बेल्जियम की छींट तुर्की का लाल कपड़ा, यहां बिकता मिलेगा। यहां हिरात, नैपाल और मेवाड़ के भाले, छुरी, और शेफेल्ड के चाकू मिलेंगे। जैपुरी साफे, संगमरमर की मूर्तियां, तांबे की अंगीठी, कामदार जूते, सोने के आभूषण, सांभर का नमक मिलेगा। यहां कुछ लोग कामदार हौदे से सजे हुये हाथी पर, कुछ ऊंटों पर, कुछ घोड़ों पर

और बहुत से पैदल लोग मिलेंगे। गणेश की सवारी सुनहरी पालकी पर जाती है। जलसे के बाद विशाल भोज होता है। बगीचे में नाच और आतिशबाजी होती है।

आम्बेर

नई राजधानी (जैपुर) से जो मार्ग पुरानी राजधानी (आम्बेर) को गया है वह बड़ा मनोहर है। उत्तरी-पूर्वी दरवाज़े से बाहर निकलने पर सुन्दर बग़ीचे मिलते हैं। यहां तरह तरह के वृक्ष और फलवाली लतायें हैं। वर्षा ने बालू और चट्टान सब कहीं हरियाली की चादर बिछा दी है। कांटेदार झाड़ियों, बगीचों को एक दूसरे से अलग करती है। इनका काँटा चुभ जाने से बलवान मनुष्य भी चिल्लाने लगता है। उसे प्रायः ज्वर आ जाता है। यह कांटेदार झाड़ियां कई फुट ऊंची हैं। काली खो पर्वत यहां एक अर्द्धवृत्त बनाता है। इनके दोनों सिरे जैपुर की चारदीवारी से मिल जाते हैं। इनसे जो घाटी घिरी हुई है उसमें

रेगिस्तानी बालू नहीं पहुँचने पाती है। इसी से यह बहुत हरी भरी है। इस घाटी में पहले एक नाला बहता था और पूर्व की ओर समाप्त हो जाता था। एक राजा ने इस नाले को रोकने के लिये इसके आरपार एक बांध बनवाया। आगे बहने का मार्ग रुक जाने से नाले के पानी से एक झील बन गई झील के किनारे सुन्दर बगीचे और भव्य भवन बन गया। पर झील का पानी प्रतिवर्ष बढ़ता ही गया। धीरे धीरे यह पानी राजमहल तक पहुंच गया। निवासियों ने झील के पानी को काटना उचित न समझा। अतः वे अपने घरों और बग़ीचों को छोड़ कर दूसरे घाट पर जा बसे।

झील का वर्तमान दृश्य बड़ा मनोहर है। महल आधे उजड़ गये हैं। इनके संगमरमर के खम्भे आधे पानी में डूबे हुये हैं। इनके ऊपर घनी वनस्पति है। झील का पानी एक दम नीला है। बीच में शाही गढ़ है। इसकी निचली मंजिल लुप्त हो गई है। पीपल के पेड़ों ने बुर्जों में दरारें कर दी हैं। छोड़ने के बाद फिर यहां किसी मनुष्य ने बसने का साहस नहीं किया। घड़ियाल और कछुये इस झील के एक मात्र निवासी

हैं। घड़ियालों की संख्या यहां बहुत अधिक है। इतने थोड़े पानी में इतने अधिक घड़ियाल संसार के और किसी भाग में नहीं मिलेंगे।

ऊँचे पत्थर के पुल के ऊपर से आम्बेर को मार्ग गया है। यह पुल झील के एक कोने में बना है। जब कोई पुल के ऊपर से आता है। तब यह भयानक घड़ियाल पुल के दोनों ओर इकट्ठे हो जाते हैं। कमल के पत्तों के बीच में इनकी आंखें यात्री की ओर टकटकी लगाये रहती हैं। यदि किसी घोड़े का पैर फिसल जावे और वह पानी की ओर झुक जावे तो घोड़े और घुड़सवार की कुशल नहीं है। पहली बार जब मैं इधर से गया तो मैं डर के मारे घड़ियालों को देखने के लिये सड़क पर नहीं ठहरा। झील के द्वीप में सैकड़ों सारस थे। घड़ियालों के पास जङ्गली बतखें इधर उधर उड़ रही थीं। महाराज रामसिंह उन्नत विचारों के हैं। पर वे इन घड़ियालों की रक्षा करते हैं। किसी को इन्हें मारने या छेड़ने की आज्ञा नहीं है। झील के दूसरे किनारे पर एक टूटा हुआ दरवाज़ा है। यहीं होकर पुल की सड़क गई है। यहीं से आम्बेर का पवित्र नगर

आरम्भ होता है। इसके दूसरी ओर बहुत ही सपाट घाट है। यहां से सीधी रेखा में तीन चार सौ फुट ऊंची पहाड़ी है। इस पहाड़ी की चोटी पर पहुँचने पर दूसरा दरवाज़ा पड़ता है। यही आम्बेर का प्रवेश द्वार है। यहां सब कहीं घना जंगल और चट्टानों का ढेर दिखाई देता है। नगर का नाम नहीं है। पीछे मुड़ने पर समस्त घाटी और जैपुर के भव्य भवन दिखाई देते हैं। कुछ दूर तक सड़क जंगल में होकर जाती है। फिर जहां इसका तंग मोड़ है वहीं अचानक आम्बेर की घाटी आ जाती है। एक ऐसे ज्वाला मुख (क्रेटर) का कल्पना करो। जिसके किनारे जंगल से ढके हों और जिसके बीच में विशाल हरी पहाड़ी खाड़ी हो। इसी पर परियों के महल के समान चमकीले संगमरमर का महल बना है। इसकी शान के सामने सेविल (स्पेन) और ग्रानाडा के महल कुछ भी नहीं हैं। महल के चारों ओर शान्त और उजड़ा हुआ नगर है। इस नगर का एक साधारण घर भी एक विशाल भवन है। इसके पास ही एक धुंधली काली झील है। यहां एरेबियन नाइट का सा भयानक रहस्य सामने आ जाता है। महल की शोभा असाधारण

है। संगमरमर के कुछ पीले हाथी दांत के समान चमकता है। दीवारों पर सुनहरे भज्जे हैं। सचमुच यह जादू का सा महल है। कुछ अचानक मोड़ों के पास हम ताल कटोरा के पवित्र ताल के किनारे आ जाते हैं। इसके किनारों पर सुन्दर बगीचे हैं। ढालों पर जहां तहां संगमरमर की छतरियां हैं। इन्हीं के पड़ोस में भस्म लगाये हुये फकीरों के कुछ झुण्ड हैं। ताल का पानी समूची घाटी को घेरे हुये है बड़ी कठिनाई से सड़क के लिये स्थान बचा है। ,बांध की दूसरी ओर नगर बसा है। यहां सुन्दर बगीचे, ग्रीष्म राज प्रासाद कृत्रिम झीलें और आम और सन्तरों के कुञ्ज हैं। झील की परिक्रमा करते हुये संगमरमर की सीढ़ियों के ऊपर चढ़ कर हम बड़ी कठिनाई से किले के पास पहुँचे। मार्ग के दोनों ओर किलेबन्द दीवारें हैं। मोड़ पर विशाल द्वार है।

यह किला झील के तल से ८० या १०० फुट ऊँचा है। लेकिन पत्थर की दीवारें लम्बाकार झील के पानी के ऊपर सीधी खड़ी है। इससे सामने का भाग झील तल से २०० फुट से अधिक ऊँचा दिखाई देता

है। ऊपरी भाग में कुछ बराम्दे और कमरे हैं। यह किले के बाहरी भाग को सजाते हैं। प्रधान द्वार महराब दार है। इसके ऊपर छोटी छतरी सी बनी है। इसके आगे एक बड़ा आंगन है। आंगन के तीन ओर अस्त-बलों और बारकों की पंक्तियां हैं। यह आंगन पहाड़ी के निचले पठार को घेरे हुये है। महल के प्रधान भवन अधिक ऊँचे पठार पर बने हैं। वहां पहुँचने के लिये सुन्दर जीना बना है। बढ़िया कारीगरी से सुशोभित द्वार को पार करते ही हम भव्य भवन में आ जाते हैं। यह महल भारतवर्ष भर में आश्चर्य जनक है। टीले के एक सिरे पर दीवान खास का बड़ा कमरा है। यह बड़ी कला पूर्ण इमारत है। यहां खम्भों की दुहरी पंक्ति है। इन्हीं के ऊपर छत सधी है। छत बड़ी ऊंची और मज़बूत है। दीवान खास के तीन ओर खम्भे हैं। चौथी ओर ठोस दीवार है। इसी के सामने झील है। यह इमारत सब ओर से हवा के लिये खुली है। दीवान खास का चबूतरा सफेद संगमरमर का बना है। यह सिंहासन का काम देता है। फर्श रंगीन संगमरमर की बनी है। खम्भों की पहली पंक्ति लाल पत्थर की बनी है। इनके

सिरे बड़े सुन्दर हैं। चोटी पर हाथी बने हैं। इनकी सूंड़ पर ढालू पर छोटे पत्थर सधे हैं। खम्भों पर सधे हुये पत्थरों की बढ़िया कारीगरी पलस्तर ढाक दी गई है। कहते हैं जब जहांगीर ने सुना कि यह महल शाही महल से भी अधिक शानदार बन गया है तब उसने इस महल को गिरवाने की आज्ञा निकाली। जब इस महल के निर्माता ने यह सन्देश सुना तो उसने कारीगर के काम पर पलस्तर करवा दिया। जब शाही दूत स्थान पर पहुँचे तब उन्होंने यहां साधारण कारीगरी का काम देखा। यह समाचार लेकर जब यह दूत जहांगीर के पास पहुँचे तब उसका क्रोध शान्त हो गया। जहांगीर के उत्तराधिकारियों ने फिर इस ओर ध्यान न दिया। पलस्तर छुड़ाने पर यह बढ़िया कारीगरी अब भी ज्यों की त्यों दिखाई देती है। दूसरी पंक्ति के खम्भे भूरे संगमरमर के समूचे टुकड़े से अलग अलग बने हैं। टीले के दूसरे सिरे पर महाराज के रहने का स्थान है। इसके बीच में स्मरणीय द्वार है। यह भारतवर्ष भर में सबसे अधिक सुन्दर और कला पूर्ण स्थान है। बहुमूल्य संग-मरमर और सुनहरी कारीगरी के आश्चर्यजनक समूह का

ठीक ठीक वर्णन करना कठिन है दरवाज़ों की संगमरमर की जाली और भी अधिक सुन्दर है। वे समूचे पत्थर की चद्दर पर बनी हैं। दूर से देखने पर वे पार दर्शक मलमल के परदों के समान दिखाई देती है। इस द्वार के भीतर घुसने पर स्थान स्थान पर आश्चर्यजनक चीज़ें दिखाई देती हैं। आंगन के चारों ओर महल के भवन हैं। बीच में परियों का सा बगीचा है। यहां बहुत समय से राजा ने रहना बन्द कर दिया है। पर इसकी देख भाल करने के लिये कुछ नौकर रहते हैं। बगीचे के बाईं ओर जस (यश) मन्दिर है। इसके निचले भाग में महराब दार बराम्दा है। इसके बाहरी भाग कामदार संगमरमर से सजे हैं। भीतरी भाग में तीन बढ़िया कमरे हैं। यह छत से लेकर फर्श तक सुन्दर कारीगरी से सुसज्जित हैं। इनमें रंग बिरंगे चमकीले बहुमूल्य पत्थर लगे हैं। स्थान स्थान पर पत्थर के बीच में दर्पण लगे हैं। सूर्य की किरण आने पर यह पत्थर हीरे की भांति चमकते हैं। ऊपरी मंज़िल में संगमरमर छतरी है। एक ओर से खिड़कियां हैं। यहां से बड़ा बढ़िया दृश्य दिखाई देता है।

पीछे की ओर सुन्दर ज़ीन है। यहां अनार और सन्तरे के पेड़ों की छाया रहती है। छुट्टी बिताने के लिये इससे अधिक आनन्ददायक दूसरा स्थान नहीं हो सकता। यहां अटूट शान्ति, मनोहर दृश्य और परी के समान बगीचों से सजा हुआ सुन्दर महल है। बगीचे की दूसरी ओर महलों की एक लम्बी पंक्ति है। यह भी उस मन्दिर के समान मनोहर है। एक महल की दीवारों में चन्दन, हाथी दांत और चांदी की जड़ाई है। कमरों में पानी के लिये छोटी नालियां हैं। इनमें होकर बड़े बर्तनों में पानी इकट्ठा होता है। इनके बनावट मछली, कमल आदि कई प्रकार की है। कुछ बर्तन या हौज़ सफ़ेद सफ़ेद संगमरमर के बने हैं। कुछ में नीले, हरे और दूसरे रंग के पत्थरों की जड़ाई है। कुछ में इतिहास और पुराण के चित्र बने हैं। राजा का स्नानागार भी मनोहर है। इसमें पानी गरम करने का भी प्रबन्ध है।

इन महलों के दक्षिण में रानियों का निवास स्थान खिड़कियों और दरवाज़ों की कमी होने पर भी बाहर से देखने पर यह भाग भला मालूम होता है। पर

भीतरी भाग उदास और सुनसान है। बड़ा आंगन कई भागों में बंटा है। मध्यवर्ती छतरी से उसे बांटने के लिये दीवारें गई हैं। प्रत्येक भाग की छतरी, पेड़, और फव्वारा अलग हैं। राजा की एक एक रानी प्रत्येक भाग में रहती थीं। आजकल इस निवास में लंगूर या हनूमान बन्दर रहते हैं। लंगूर ढाई फुट से ४ फुट तक ऊँचा होता है, यह कुछ दुबला पर बहुत ही फुर्तीला होता है। इसका चेहरा कुछ काला होता है। पर यह बहुत बुद्धिमान होता है। इसके बाल लम्बे घुंघले और रेशम के समान चमकीले होते हैं। पेट के पास कुछ बाल सफेद होते हैं। जितना बड़ा इसका शरीर होता है उतनी ही बड़ी इसकी पूंछ होती है। पूंछ पर प्रायः बाल अधिक नहीं होते हैं। केवल पूंछ के सिरे पर बालों का गुच्छा होता है। कहते हैं हनूमान जी ने इन्हीं लंगूरों की सेना लेकर लंका पर चढ़ाई की थी। आग लगने से इनका मुख काला हो गया। कुछ दिन ठहरने के बाद इन बन्दरों की टोली मुझसे परिचित हो गई। यह लंगूर निडर होकर हमारे पास आ जाते थे और रोटी, केला और चीनी ले जाते थे। पर इनका सरदार

लंगूर कभी नहीं आता था। वह हम लोगों की ओर अपनी पीठ कर लेता था। केवल एक बार उसने बड़ी कठिनाई से एक केला लिया और थोड़ा सा चक्खा। इनकी टोली अपने सरदार की देख भाल में जंगल या खेत के एक कोने में रहती है। वे इस भाग की रक्षा किया करते हैं। जब कोई अनजान व्यक्ति इधर आता है तब पहरा देने वाला लंगूर चिल्लाता है। उसका शब्द सुनते ही दूसरे बन्दर दीवार पर कूद आते हैं। जब इनकी पूरी टोली शत्रु पर चिल्लाती है तब इनका दृश्य देखने योग्य होता है। जब शत्रु कुछ दूर चला जाता है तो भी यह कुछ समय तक चिल्लाते रहते हैं। मादा लंगूर अपनी गोद में बच्चों को लेकर बैठती हैं। नर लंगूर अधिक भयानक होते हैं। इनका सरदार एक ऊंचे कोने में अलग बैठता है। वैसे यह लंगूर सीधे जान पड़ते हैं पर फँस जाने या घायल हो जाने पर यह बड़े भयानक हो जाते हैं और तेंदुए के समान अपने शत्रु पर चोट करते हैं।

आम्बेर की कब नींव डाली गई यह ठीक बतलाना कठिन है। पर अनुभव किया जाता है कि पहली

शताब्दी में इसकी नींव डाली गई। इसको मीना लोगों ने बसाया था। आरम्भ में उन्होंने इसका नाम अम्बा (माता) रक्खा। राजधानी होने के कारण यह घाट रानी या पर्वत की रानी भी कहलाने लगी। ६६७ ई० में जब ढोला राय ने इस पर अधिकार किया उस समय भी यह समृद्धिशाली नगर था। कछवा राजवंश के शासन में यह राजपूताना भर में प्रथम कोटि का नगर हो गया। १५८० ई० में मानसिंह ने वर्तमान नगर बनवाया। १६३० ई० में राजा जयसिंह प्रथम ने यहां मन्दिर बनवाया। उन्होंने दीवान-खास और दूसरी इमारतें बनवाईं। चारों ओर एक मज़बूत किलेबन्द चारदीवारी भी बनवाई इन्हीं के समय में ताल कटोरा बनाया गया और बांध को बनाया गया। आश्चर्यजनक बगीचा १६६६ ई० में सवाई जैसिंह द्वितीय ने आलीशान द्वार बनवाया। पर एक कोने में दुर्गम स्थिति होने और बढ़ाने के लिये स्थान की कमी होने के कारण उन्होंने १७२८ ई० में जैपुर में नई राजधानी की स्थापना की। उन्होंने आम्बेर निवासियों को अपनी पुरानी कन्दराओं को छोड़ने और नई राजधानी में बसने के लिये बाध्य किया। जो हाल

मेवाड़ में चित्तौड़ का हुआ वही हाल इस प्राचीन नगर का हुआ। धीरे धीरे इस का वैभव जाता रहा। केवल कुछ भवन शेष रह गये। इस समय यहां के निवासी कुछ पुजारी लंगूर और जङ्गली जानवर हैं। घाटी के उत्तरी-पूर्वी कोने में प्राचीन भग्नावशेष हैं। पुराने घर वीरान हो गये हैं। ढेरों के ऊपर घनी वनस्पति उग आई है। महादेव के मन्दिर के ऊपर सुनहरी छतरी है। प्रातःकाल और सायंकाल आरती के समय घंटों की ध्वनि से पूरी घाटी गूँज उठती है। किले की दीवारों से विशाल नगाड़े बजते हैं। कहा जाता है कि जब शिव लिंग एक दम जलमग्न हो जायगा तभी आम्बेर नगर नष्ट हो जायगा। यह जल मग्न एक छोटे कुण्ड में स्थित है अभी यह कुछ इंच ऊपर निकला हुआ है। पूर्व की ओर साधारण बाज़ार है। यह घाटी सब ओर से पर्वतों से ढकी है। केवल उत्तर-पश्चिम की ओर पहाड़ नीचा हो गया है। यहां से अलवर राज्य और बान गंगा के मैदान का सुन्दर दृश्य दिखाई देता है। यहां एक किले बन्द दरवाज़ा है। किलों की पंक्ति का केन्द्र नाहर गढ़ है। इस गढ़ से जैपुर और आम्बेर

दोनों की रक्षा होती है। पूर्वी दरवाज़े के आगे जो मैदान है वह प्राचीन महलों, सुन्दर मन्दिरों और छत-रियों से भरा पड़ा है। यहीं हिरण तेंदुआ और चीतों का अड्डा है।

सितम्बर मास से सांभर झील का दर्शन करने के लिये हमने पश्चिम की ओर प्रस्थान किया। यह झील सांभर (नगर) से ६० मील की दूरी पर मरुस्थान के बीच में स्थित है। जैपुर से यहां तक रेतीला मैदान है। सांभर के चलने पर हमने पहली मंज़िल बांदी नदी के किनारे बिताई। मार्ग में रेतीले टीलों को छोड़ कर और कुछ न था। यह टिड्डी दल का आक्रमण हुआ यह सूखे मरुस्थान को छोड़कर गंगा और यमुना के हरे मैदान की ओर बढ़ रहा था। सबेरे ही इस दल ने एक घने बादल को तरह आकाश को ढक लिया। दोपहर को सब कहीं यह दल ओलों की तरह गिरने लगा। जब तक इस दल की वर्षा होती रही आकाश धुँधला रहा फिर सूर्य दिखाई देने लगा। कई मील तक टिड्डी दल की तहों से भूमि ढक गई। अपने को बचाने के लिये डेरे से टिड्डियों को लगातार हांकना पड़ता था। चार

बजे यह दल फिर पूर्व की ओर उड़ा। यह कई सौ फुट की ऊँचाई पर एक समूह में उड़ा। यह टिड्डी कुछ कुछ अफ्रीका और योरुप की टिड्डी के समान होती है। इनकी लम्बाई ३ इंच और रंग गुलाबी है। इनके लम्बे चार दर्शक पंखों पर भूरे दाग होते हैं। इन भागों में टिड्डी दल का प्रायः आक्रमण होता है। जिस हरे खेत में इनका दल उतरता है उसे वह कुछ ही समय में चट कर जाते हैं। किसान इन्हें उड़ाने और डराने के लिये शोर मचाते हैं। पर इसमें उन्हें सफलता नहीं मिलती है केवल कौए और चील्ह उन्हें खाकर उनकी संख्या कुछ घटाते हैं।

सांभर झील अजमेर से ४० मील उत्तर की ओर जैपुर और जोधपुर की सीमा पर स्थित है। इस विशाल झील का घेरा प्रायः ५० मील है। इसके पानी को सुखाने से शुद्ध नमक बन जाता है। इससे जैपुर और जोधपुर दोनों राज्यों को आमदनी होती है। सांभर नगर जैपुर राज्य में स्थित है। मरोत जोधपुर में है। यह उत्तर पश्चिम की ओर अर्वली पर्वत को तलहटी में स्थित है सांभर नगर बड़ा पुराना है। ६८५ ई० में इसे मानिक

राव ने इसे बसाया था। जब तक राजपूती साम्राज्य बना रहा तब तक इस नगर का बड़ा मान था। यहां के राजा सांभरी राव (शाकम्भरीराव) कहलाता था।

कहते हैं जब मुसलमानों का आक्रमण हुआ तब मानिक राव ने अजमेर से चल कर मरुस्थल में शरण ली। वह आर्थिक कष्टों और पीड़ाओं से इतना दुर्बल हो गया था कि वह शरीरान्त करना चाहता था ठीक इसी समय शाकम्भरी देवी ने उसे दर्शन दिये। देवी ने राजा को वचन दिया कि घोड़े पर सवार होकर वह एक दिन में जितनी भूमि की परिक्रमा कर लेगा उतनी भूमि हरी भरी होकर उसके राज्य में मिल जायगी। पर देवी ने उसे आदेश दिया कि परिक्रमा करते समय वह पीछे मुड़ कर न देखे। मानिकराव ने सूर्योदय होते ही परिक्रमा आरम्भ कर दी। सूर्यास्त से कुछ पूर्व वह परिक्रमा समाप्त करने ही को था। इस बीच में उसे देवी के आदेश का ध्यान न रहा। उसने पीछे मुड़ कर देखा। तब तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। हरे भरे मैदान के बदले जहां तक उसकी दृष्टि गई सब कहीं विशाल जलाशय हो गया। पर उसने किसी तरह

सन्तोष किया और झील के किनारे ठहर गया और यहीं उसने शाकम्भर नगर बसाया। इससे बिगड़ कर सांभर नाम पड़ गया। झील का दृश्य बड़ा मनोहर है। यह निचली पहाड़ियों से घिरी हुई है। एक ओर यह अर्वली पर्वत को छूती है। अर्वली की विषम चोटियां सब कहीं दिखाई देती हैं। वर्षा काल में नमक नहीं बनता है। शेष ऋतुओं में इसके किनारे पर सब कहीं नमक बनता है। यह नमक अजमेर से लेकर कलकत्ते तक सब कहीं कारखाने के काम आता है। जैपुर से आगरे के लिये बढ़िया सड़क है। अलवर के लिये प्रस्थान करने पर दो दिन तक इसी सड़क पर चलना पड़ा। कुछ समय तक जैपुर की चारदीवारी के पास पास चलना पड़ा। मोती डूँगरी (मोतियों का पर्वत) अकेली पहाड़ी है। इस पर आम्बेर के राजाओं का एक प्राचीन महल बना है। जैपुर नगर छोड़ने पर एक तंग और सुनसान पहाड़ी कन्दरा मार्ग में पड़ती है। यह कन्दरा केवल एक दो मील लम्बी है। पर इसका दृश्य बड़ा सुन्दर है। यहां जैपुर वालों ने अनेक मन्दिर और बगीचे बनवा दिये हैं। बरगद के पेड़ों के

नीचे छोटी छोटी नदियां बहती हैं। जहां एक ओर काली चट्टानों पर बालू की लहरें टकराती हैं उसके दूसरी ओर यहां अवश्य कुछ पानी और छाया मिलती है। एक किलाबन्द विशाल दरवाज़ा जैपुर नगर की रक्षा करता है। दूसरी ओर बानगंगा की घाटी है। यह २०० मील लम्बी नदी यमुना में मिलती है। आगे बढ़ने पर बालू कम है। खेत अधिक हैं। २१ मील चलने के बाद डाक बंगला पड़ता है। इसके कमरे सजे हुये थे। पर यहां कई काले बिच्छू मिले।

दूसरे दिन मोहनपुर गांव पड़ा। वह एक सुन्दर राजपूत गांव है। यह कपास और बाजरा के खेतों से घिरा हुआ है। इधर का मैदान लहरदार (साधारण ऊँचा नीचा) है। कहीं कहीं तीतर बहुत हैं। जरा का बाउली एक सुन्दर ताल है। जरा गांव पास ही है। यह एक पहाड़ी की तलहटी में बसा है। इस गांव के आगे एक चौड़े घाट को पार करने पर एक घाटी आती है। इसकी मिट्टी कुछ काली और उपजाऊ है। यह घाटी ऊपरी मैदान से बहुत नीची है। कुछ मील और चलने पर जैतवारा गांव पड़ता है। यह एक नाले के किनारे

पर बसा है सूर्यास्त के पहले हम बुराना गांव में पहुँच गये। यहां एक टूटा बंगला है। इसके बाद गोधा में पड़ाव तयार किया गया। यहां एक आश्चर्य-जनक बात देखने में आई। रात्रि के समय यहां छाया सात अंश तापक्रम गिर जाता है। पर बरगद और दूसरे पेड़ों के नीचे पड़ोस के स्थानों की अपेक्षा पन्द्रह या सोलह अंश बढ़ जाता है और गरमी से दम घुटने लगता है। सूर्योदय होने पर हम अर्वली पर्वत के प्रदेश में पहुँचे। यहां खेतों के बीच में कई गांव थे। इन्हें यहां मेवातों पहाड़ी कहते हैं। पहाड़ियों की प्रथम पंक्ति को पार करने पर बान गंगा नदी आ जाती है। इसमें खालिखो और मेवाती पहाड़ियों से जल आता है। २०० मील बहने के बाद यह यमुना में मिल जाती है। यहां यह अपने स्रोत से दूर न थी फिर भी इसका पेटा या तीन चार सौ गज़ चौड़ा था। पर पेटा अधिक-तर सूखा था। वर्षा ऋतु में इसका पूरा पेटा भर जाता है। उस समय यह बड़े वेग से बहती है। कभी-कभी इसकी बाढ़ किनारों के ऊपर चढ़ कर दोनों ओर दूर तक पहुंचती है। बान गङ्गा के बायें किनारे पर गोधा

गांव स्थित है। यह उपजाऊ प्रदेश के बीच में बसा है। अधिकतर घर पक्की ईंटों के बने हैं। इसकी तंग गलियां बड़ी साफ हैं। पड़ोस में वृक्षों की छाया है। हरे पेड़ों से प्रायः पूरा गांव घिरा है। गांव के उत्तर में कई सौ वर्ष का एक पुराना गढ़ है। दूसरे दिन हम बुसवा गांव में पहुँचे। यह जैपुर राज्य की सीमा पर स्थित है। गांव के बाहर जैपुरी सिपाहियों की एक टोली थी। यहां से कुछ ही मील आगे राज्य की सीमा समाप्त होती है। जैपुर और अलवर की सीमा पर एक सादा पत्थर गड़ा है।

जैपुर के दर्शनीय स्थान

जैपुर भारत के दर्शनीय स्थानों में है। चौड़ी सड़कों के दोनों ओर प्रायः एक ढांचे के बने हुये और गेरुआ रंग से रंगे हुये घर बड़े सुहावने लगते हैं। भूत पूर्व प्रधान मन्त्री मिर्ज़ा इस्माइल ने चोड़ी सड़कों के दोनों ओर नये वृक्ष लगवा कर और नये ढंग से घरों को सजवा कर जैपुर की शोभा और अधिक बढ़ा दी है। फिर भी जैपुर में विशेषता रखने वाले कुछ दर्शनीय स्थान हैं।

रामनिवास बाग बड़ा सुहावना है। यहां का अजायबघर चित्रों, पुरानी कारीगरी के बर्तनों, वस्त्रों, सिक्कों, दुर्लभ पुस्तकों और अस्त्र शस्त्रों का अपूर्व भंडार है। यहां कई युगों की मूर्तियां रक्खी हुई हैं। राजपूताना तथा देश-विदेश की कई विचित्र चीज़ों का यहां अपूर्व संग्रह है। इनका भली भांति निरीक्षण करने में कई घंटे लगाये जा सकते हैं।

अजायबघर से कुछ ही दूर चिड़िया घर है। यहां तरह-तरह के पशु और पक्षियां दूर-दूर से लाकर रक्खे

गये हैं। चीता, लंगूर, भालू, शुतुमुर्ग आदि संसार के अनेक पशु इस एक स्थान पर सहज ही में देखे जा सकते हैं। प्रकृति से प्रेम रखने वालों को गलता का अवश्य दर्शन करना चाहिये। जैपुर शहर से पूर्व की ओर पहाड़ियों में कन्दरा बन गई है। यहां पहाड़ों के भीतरी भागों से छन छन कर पानी आता है। एक स्थान पर झरना और कुंड बन गया है। इसके दोनों ओर मन्दिर हैं। नीचे उतरने के लिये घाट हैं। यहाँ स्नान करने और प्रकृति की सुन्दरता से लाभ उठाने के लिये जैपुर के भक्त लोग आया करते हैं। कहते हैं यह गालव ऋषि का आश्रम था। गालव का ही अपभ्रंश गलता है। जैपुर राज्य प्राचीन होने पर नवीन उत्साह से भरा पड़ा है। राज्य की ओर से किसानों की दशा सुधारने के लिये गांवों में पक्की कोठी (पातालतोड़ कुएं) बनाने, दुष्प्राप्य बीज बांटने आदि की कई उपयोगी योजनायें हैं। जैपुर राज्य भारतवर्ष के प्रसिद्ध सेठों का निवास स्थान है। उनकी कमाई का काफी बड़ा भाग जैपुर राज्य में शिक्षा फैलाने और लोक सेवा के दूसरे कामों में लगता है। जिन स्वर्गीय जमुनालाल जी

बजाज़ का घर कांग्रेस कमेटी के सदस्यों और दूसरे राष्ट्र भक्तों के लिये सदा खुला हुआ अतिथि घर था। उनका जैपुर राज्य से घनिष्ट सम्बन्ध था। आधुनिक भारत के कुबेर और दानी का जन्म स्थान इसी राज्य का पिलानी नगर है। पिलनी में विरला कालेज़, अनुसन्धान पुस्तकालय आदि पर जो उन्होंने जी खोल कर खर्च किया है वह पूंजी पतियों के लिये एक आदर्श है।

पर जैपुर राज्य में एक और दर्शनीय स्थान है जिसकी ओर समस्त भारत की दृष्टि लगी रहती है। वह राष्ट्रीय तीर्थ वनस्थली का विद्यापीठ है। अभी हाल में इसका ग्यारहवां वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया था। यह स्थान बन्थली स्टेशन से कुछ ही मील दूर है। सभ्यता के झगड़ों से दूर इस प्रायः निर्जन स्थान में इस समय भी छाया देने वाले केवल बबूल के पेड़ हैं। इनकी गहरी जड़ें अधिक गहराई की नमी लेकर उन्हें किसी प्रकार ज़िन्दा रखती हैं। मार्ग से दूर कांटेदार घास है। सर्पों की भी कमी नहीं है। इसी विकट स्थान में जीवन के सुखों से मुख मोड़ कर और प्रतिदिन जीवन की आहुति देकर श्री हीरालाल जी

शास्त्री ने अपनी प्रिय कन्या की अकाल मृत्यु के पश्चात् इसकी स्मृति में इस विद्यापीठ की स्थापना की। श्रीमती रतन शास्त्री ने एक कन्या की माता होने के बदले प्रतिवर्ष अनेक कन्याओं की माता बनने का भार अपने ऊपर लिया। रोने धोने के बदले उन्होंने अपना सब समय दूसरी कन्याओं को शिक्षित करने और उन्हें उन्नत और सुखी बनाने का दृढ़ संकल्प किया। जहां ऐसे दृढ़ प्रतिज्ञ दो व्यक्ति अपने कर्तव्य में लग गये। वहां उन्हें कई त्यागी सहयोग देने वाले साथी भी मिल गये। वनस्थली विद्यापीठ इन्हीं के सतत परिश्रम का फल है। यहां की लड़कियां पढ़ने लिखने के अतिरिक्त पुरुषों की भांति तरह तरह के खेल और व्यायाम करती हैं। वे साइकिल चलाती हैं। घोड़े तेज़ दौड़ाती हैं। वे लाठी, तलवार, भाला आदि चलाती हैं। वे चक्की पीसती हैं। रसोई करती हैं। रोटी, पूड़ी आदि भांति भांति का भोजन बनाती हैं। वे सब चरखा चलाना और गृहोचित सभी काम सीखती हैं। यहां छोटी बड़ी सभी लड़कियां आती हैं। छोटी लड़कियों को खेल द्वारा अक्षरों की शिक्षा दी जाती है। यहां सोने, जागने,

पढ़ने, काम करने और खेलने का अलग-अलग समय नियत हैं। सब काम नियमित रूप से चलता है। यह विद्यापीठ लड़कियों को स्वावलम्बिनी, पुरुषार्थी, परिश्रमी बना कर उन्हें देश भक्ति, विद्या प्रेम और गृहस्थ धर्म की शिक्षा देता है। इस विद्यापीठ में केवल कोरी पढ़ाई ही नहीं है। यहाँ आदर्श जीवन की शिक्षा है। क्या ही अच्छा हो यदि भारतवर्ष की दूसरी कन्या पाठशालायें समय नियत करके अपनी अध्यापिकाओं और कन्याओं को कुछ समय के लिये भेज कर इस विद्यापीठ से लाभ उठाया करें।

DESH-DARSHAN Regd. No. A-186

March 1946.

अगले महीने (मार्च १९४६)

में

बग़दाद

का

इसी तरह का

सचित्र वर्णन रहेगा

यदि आप अभी तक

देश-दर्शन

के

ग्राहक नहीं बने हैं

तो

४) रु० भेज कर

एक वर्ष के लिये ग्राहक बन जाइये ।